कविता

मोतीलाल दास

भारतीय रेल सेवा में कार्यरत
डोंगाकाटा, नंदपुर, मनोहरपुर, झारखंड
ई-मेल : motilalrourkela@gmail.com

अवसाद

हो सकता है
नदी और आकाश के प्रसंग में
कहीं भी नहीं ठहरती हो
हमारी प्रार्थनाएं
और चीजों के भ्रष्ट होने में
भय की दीवारों के पीछे से
कोई परेशान आंखें झांक लेती हो

अब तुम ही बताओ
कैसे कोई चूहा
शेर में तब्दील हो
या कोई हाथी
बदल जाए चींटी के शक्ल में
भले ठंडे होने की प्रक्रिया
फाइलों में कसमसाती हो

साफ जाहिर है कि
सारी पंक्तियां
एक साथ नहीं पढ़ी जानी है
डिटेल्स में जाने की अपेक्षा
हम समरी देखना चाहते हैं
ठीक हमारे बोसां ईकी तरह
और बचा लेते हैं हम
काल के सागर से
अपना समय
पर कदम
क्लब की ओर मुड़ जाते हैं

काहे का रोना
सड़े फलों को देखकर

अगर हो सके
हम बना लें ऐसी कविताएं
जो दे पाए फलों का स्वाद
और लड़ लें
ठंड से
धूप से
पाले से
तब बची रह सकती है
हमारी नदियां
हमारी फसलें
और हमारा आकाश.

ऐलान

यहाँ
नृत्य करता है
तुम्हारे आश्चर्य
मेरे सपने

आसमां में चारों ओर
कुछ हकीकतों को
तुम बेशक ठोकर मारते हो

पर जब नाच उठता है जंगल
तुम्हारे महल
धाराशायी होने लगते हैं.